RESEARCH PAPER | History | Volume : 5 | Issue : 11 | November 2015 | ISSN - 2249-555X

जनता पार्टी व लोकदल सरकारों की विदेश नीति : एक ऐतिहासिक अध्ययन

KEYWORDS

Dr. Dilbag Singh Bisla

निदेशक राजीव गांधी शोध एवं अध्ययन केन्द्र, आर्यन संस्थान, रतिबाढ़ भोपाल।

भारतीय छठी लोकसभा के चुनाव संसदीय इतिहास में एक असाधारण घटना थी।1 इसे भारत के लोकतांत्रिक इतिहास में नये युग का आरम्भ माना गया। संगठन कांग्रेस के नेता मोरारजी देसाई के नेतृत्व में भारतीय लोकदल, संगठन कांग्रेस, जनसंघ, समाजवादी दल और लोकतांत्रिक कांग्रेस को मिलाकर जनता पार्टी का गठन किया। इस पार्टी को संसद में सर्वाधिक स्थान प्राप्त हुए। राष्ट्रीय कांग्रेस की यह पहली हार थी जिसमें नीति परिवर्तन के चिन्ह मौजूद थे। प्रश्न था इस सरकार की विदेशनीति क्या होगी? विदेशनीति के बारे में जनता पार्टी के चुनाव घोषणा पत्र में विशुद्ध असंलग्नता पर जोर दिया गया, राजनीतिक क्षेत्रों में इसका अर्थ लगाया जा रहा था कि अब जनता सरकार का झुकाव सोवियत रूस की तुलना में संयुक्त राज्य अमेरिका की तरफ अधिक होगा।2

आम चुनावों में विजयी होने के पश्चात जनता पार्टी ने सर्वसम्मति से मोरारजी देसाई को देश का प्रधानमन्त्री घोषित किया तथा अटल बिहारी वाजपेयी भारत सरकार के नये विदेशमंत्री बने। इस तरह सरकार परिवर्तन के साथ ही भारत की विदेशनीति में परिवर्तनों के प्रति भी कई तरह के अनुमान लगाये जाने लगे थे।3 अलग-अलग दृष्टिकोणों एवं विचारधाराओं से सम्बन्ध होने के कारण विभिन्न घटकों में विदेश नीति के दृष्टिकोण में भी भिन्नता थी। मुख्य रूप से जनसंघ घटक जो विदेश नीति को भावात्क दृष्टि से देखता था जिसे अरब-इजराईल युद्ध में इजराइल का पक्ष अधिक उचित लगता था और जो साम्यवादी खेमे का कटु आलोचक था, ऐसे घटक के नेता की विदेश मंत्रालय में नियुक्ति के फलस्वरूप परिवर्तन की आकांक्षाएं निराधार नहीं थी। ये सभी नेहरू की व उसके उत्तराधिकारियों की विदेश नीति की आलोचना करते आये थे।

किन्तु अब एक व्यक्ति नेतृत्व के स्थान पर नई सरकार में संयुक्त नेतृत्व की स्थापना हुई। अत: यह आशा की गई थी कि नई सरकार भी असंलग्नता की विदेश नीति पर ही चलती रहेगी। विदेश नीति के सिद्धांतों में कुछ परिवर्तन का आभास मात्र देने के लिए विदेशमंत्री ने असंलग्नता के स्थान पर ''सही असंलग्नता'' की बात कही थी। सम्भवत: उनका आशय यह था कि वे दोनों महाशक्तियों से समान दूरी रखेंगे। किसी से विशिष्ट सम्बन्ध नहीं होंगे।4 भारतीय विदेश नीति के इस मौलिक स्वरूप पर आंतरिक चर्चा के अतिरिक्त जनता पार्टी की विदेश नीति इन्दिरा गांधी कालीन विदेश नीति का अनुसरण ही कहा जा सकता है। प्रजातांत्रिक देशों में सरकार बदलने पर विदेश नीति में परिवर्तन आवश्यक नहीं होता। क्योंकि राष्ट्रीय हितों की निरंतरता बनी रहती है।

सभी देशों के साथ समानता और पारस्परिकता के आधार पर मैत्री सम्बन्धों को दृढ़ करने की दिशा में जनता सरकार आगे बढ़ रही थी। जिन क्षेत्रों की गत कुछ वर्षो में उपेक्षा हुई थी, उनकी ओर विशेष ध्यान दिया गया तथा पूर्व एशिया एवं दक्षिण एशिया के देशों में स्थित भारतीय राजदूतों का दिल्ली में सम्मेलन आयोजित किया गया। उसमें तय हुआ कि इस क्षेत्र की जो अब तक उपेक्षा हुई उसे दूर किया जाए और आर्थिक तथा सांस्कृतिक सम्बन्धों को बढ़ाने की दिशा में प्रबल प्रयास किया जाए।5

दक्षिण अफ्रीका में रंग भेद के विरूद्ध जो संघर्ष चल रहा था उसको सहयोग देने की नीति को खुलकर समर्थन व सहयोग देने ओर उस पर अमल करने की बात विदेश मंत्री ने कही। भारत चाहता था कि अफ्रीका में रंग भेद की समस्या का शान्तिपूर्ण ढंग से अतिशीघ्र समाधान हो। यह मुख्यत: इस बात पर आधारित होगा कि इयाल स्मिथ का अवैधानिक शासन अपना दुराग्रह और जबरन अधिकार त्यागने और विवेकशील दृष्टिकोण अपनाने को तैयार है कि नहीं। नामीबिया में भी जिसे अर्न्तराष्ट्रीय राज्य क्षेत्र का दर्जा मिला हुआ। संयुक्त राष्ट्र की सत्ता विश्वसनीयता ओर प्रतिष्ठा को समान तथा चुनौती का सामना करना पड़ रहा था। भारत सरकार के नये विदेश मन्त्री अटल बिहारी वाजपेयी ने भारत का दृष्टिकोण स्पष्ट करते हुए कहा था कि बालविसके जो नामीबिया का एक भाग है, अपने राज्य क्षेत्र में स्थिति कैम्प प्रान्त में शामिल करने के दक्षिण अफ्रीका के निर्णय की हम निंदा करते हैं। उसी तरह नामीबिया के एक क्षेत्र में परमाणु परीक्षण करने के लिए कथित उपयोग करने को भी भर्त्सना करते है। हम पूर्णरूपेण 'सवापो' के साथ है।6

हम यह विशेष अपील करते है कि हमारे चारों ओर के हिन्द महासागर के विशाल क्षेत्र को बड़ी शक्तियों की प्रतिद्वंद्विता और सैनिक अडडों से मुक्त रखा जाए जिसका उपयोग आक्रमण के लिए हो सकता है। विस्तृत परिप्रेक्ष्य में भारत तनाव शैथिल्य के प्रयत्नों का स्वागत करता है। उपरोक्त संदर्भ में यह स्पष्ट है कि भारत की वर्तमान विदेश नीति क्रमश: पुरानी नीति का विकसित और जनता सरकार के प्रयासों के फलस्वरूप उसमें और पैनापन आया। इसी क्रम में हमारे निकटतम पड़ोसी देशों के सम्बन्धों को सुधारने की पहल का विशेष रूप से उल्लेख किया जा सकता है, इस दृष्टि से नेपाल-भारत संबंधों में जो शिथिलता आ गई थी उसे कम किया गया। बर्मा से हमारे संबंध अच्छे हुए है। अफगानिस्तान और भारत की मैत्री की दिशा में नई शुरूआत हुई।7 14 अप्रैल 1978 को नई दिल्ली में 'सलाल बांध' के बारे में भारत-पाक समझौता भी जनता पार्टी की सरकार का पड़ोसी देशों के साथ सम्बन्ध सुधारने की नीति समझा जाता है। चीन से भारत के सम्बन्ध सुधरने लगे थे। अटल बिहारी वाजपेयी फरवरी, 1979 में चीन की यात्रा पर गये थे, परन्तु चीन के वियतनाम पर आक्रमण के कारण उन्हें यात्रा पूरी करे बिना ही वापिस भारत आना पड़ा था। क्योंकि वियतनाम एक गुटनिरपेक्ष देश था।8

भारतीय विदेश नीति में जिस पक्ष के बदलने की सम्भावना सबसे अधिक थी वह गुटनिरपेक्षता की नीति थी। इसके बारे में सबसे पहला संकेत जनता पार्टी के घोषणा पत्र में देखा जा सकता है इसके अनुसार सच्ची गुटनिरपेक्षता पड़ोस के सम्बन्ध तथा मानव अधिकारों के उल्लंघन का विरोध है। इन सूत्रों को भारतीय विदेश नीति के सम्बन्धित परिवर्तनों का आरम्भ माना जा सकता था।

लेकिन इसके पूर्व भारतीय गुटनिरपेक्षता पर इन्हीं नेताओं की राय कांग्रेस से एकदम भिन्न थी । जनसंघ के महामंत्री दीनदयाल उपाध्याय ने नेहरू जी की गुटनिरपेक्षता की नीति का स्पष्ट खंडन किया था तथा पश्चिमी देशों के साथ गठबंधन करने की नीति की वकालत की थी।9

गुटनिरपेक्षता की नीति की आलोचना जनसंघ के नेताओं से भी ज्यादा स्वतन्त्र पार्टी के चक्रवर्ती गोपालाचार्य तथा मीनू मसानी ने की थी। सन् 1964 में बंगलौर में स्वतन्त्र पार्टी के तीसरे राष्ट्रीय सम्मेलन में अपने एक प्रस्ताव में कहा था कि कांग्रेस सरकार की इन नीतियों में सबसे अधिक दु:खदायी और विनाशकारी धारणा थी गुटनिरपेक्षता की, जिसके कारण विदेश नीति में दोहरे मापदण्ड उत्पन्न हुए। कम्युनिष्ट चीन का निरन्तर तुष्टीकरण, दक्षिण और दक्षिण पूर्वी एशिया के अपने पड़ोसी देशों के प्रति बेरूखी, सन् 1950 में चीनी साम्यवादी साम्राज्यवाद के आगे तिब्बत की गलि, सन 1956 में हंगरी की क्रान्ति को दबाने के सोवियत कदम का संयुक्त राष्ट्र में समर्थन तथा इजराईल के साथ राजनयिक सम्बन्ध स्थापित करने से निरन्तर इन्कार आदि दोहरे मापदण्ड़ों के उदाहरण है।10

Volume : 5 | Issue : 11 | November 2015 | ISSN - 2249-555X

इसी प्रकार भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने गुटनिरपेक्षता की नीति को एक ढोंग कहा था। शुरू से ही नेहरू ने एक नया कथित तीसरा खेमा बनाने की नीति अपनाई थी। यह वह नीति थी जो पूंजीवादी हितों का प्रतिनिधित्व इस प्रकार करती थी कि वह भारत को लो. कतांत्रिक खेमे से अलग रखती थी और उसे साम्राज्यवादी खेमे की तरफ ले जाती थी।11

उपरोक्त राजनीतिक पार्टियों के विचारों से स्पष्ट हो जाता हैं कि ये सभी कांग्रेस की गुटनिरपेक्षता की नीति का विरोध करते थे। कहीं-कहीं इसे स्वीकारा भी था तो भी मतभेद निश्चित रूप से बने हुए थे। लेकिन सन 1977 में इन्ही पार्टियों के एकीकरण और इनकी नई जनता सरकार के प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई और विदेश मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने स्पष्ट कहा था कि नेहरू द्वारा प्रतिपादित भारत की विदेश नीति का सैद्धान्तिक पक्ष सही हैं, परन्तु व्यवहार में झुकाव एक विश्व शक्ति की ओर रहा हैं। अत: दोनों ही नेहरू की गुट निरपेक्षता की नीति का पूरी तरह समर्थन तो करते हैं उसी के अनुसार यह घोषणा भी की गई थी कि भारत की विदेश नीति वही होगी जो चल रही है। किसी तरह का परिवर्तन नहीं किया जायेगा। साथ ही सभी राष्ट्रों व महाशक्तियों से अच्छे सम्बन्ध बनाये जायेंगें, किसी विशेष देश के साथ नहीं।12

जनता सरकार के विदेशमंत्री वाजपेयी ने जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में विदेश नीति परिसवांद के उद्घाटन में कहा था कि, ''जनता सरकार में राष्ट्रीय सहमति रही, वहीं विदेश नीति में निरन्तरता के सिद्धान्त का पालन किया हैं। जहां भी राष्ट्रीय इच्छा बदलने का काम ज्यादा करने के पक्ष में दिखाई दी वहां जनता सरकार ने वैसा करने में कोई संकोच नहीं किया।''13

वाजपेयी ने गुटनिरपेक्षता का आधार राष्ट्रीय सहमति बताया था और स्पष्ट किया था कि, ''लगभग एक साल पहले जनता पार्टी सतारूढ़ हुई तो हमने राष्ट्रीय सहमति पर आधारित ऐसी विदेश नीति बनाई जो सच्ची गुटनिरपेक्षता का प्रतिपादन करती हैं।''14

वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था विकसित राष्ट्रों के अनुकूल है और इसलिए विश्व में साधनों का असमान वितरण हो गया हैं, गरीबी बढ़ गई है। अत कुशल आर्थिक रणनीति की नितांत आवश्यकता है जिससे वांछित परिवर्तन लाया जा सके।

सेनफ्रांसिसकों में 11 जून, 1978 को सभा में बोलते हुए भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई ने भारतीय दृष्टिकोण को स्पष्ट करते हुए कहा था कि, ''नूतन अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की ओर जाने वाली सड़क लम्बी, उबड-खाबड़ और टेढी-मेढ़ी भले ही हो, परन्तु उसे कभी मृगतृष्णा नहीं बनने देना चाहिए। यह सही हैं कि संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे देशों को नेतृत्व की भूमिका निभानी हैं ताकि इस भूतल पर दरिद्रता और अभाव के पाप को समूल नष्ट करने के ध्येय की योजना का क्रियान्वयन हो सकें।15

भारत के तत्कालीन विदेशमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने इसी प्रकार के विचार संयुक्त राष्ट्र संघ के 11 अक्टूबर 1978 की बैठक में प्रकट किये थे, उन्होंने कहा था कि वर्तमान विश्व अर्थव्यवस्था से कुछ रियायतें प्राप्त कर लेना पर्याप्त नहीं हैं। उन्होंने मांग की थी कि अर्थव्यवस्था के उद्देश्य की पूर्ति हेतू हमें अनुकूल एवं वर्गीकृत साधनों को अपनाना चाहिए। इन साधनों में वस्तुओं के लिये सामान्य कोष विश्वसनीय आधार पर वित्तिय प्रसाधनों का पर्याप्त प्रवाह, अन्तर्राष्ट्रीय वित्त व्यवस्था में यथेष्ट सुधार और बहु-राष्ट्रीय कोआपरेशन के लिए सरल नियमों की रचना आदि समाविष्ट हैं।16

जनता शासन ने परम्परागत रूप से विदेशनीति के सभी सिद्धान्तों का पालन किया। साम्राज्यवाद उपनिवेशवाद एवं नस्लवाद का विरोध किया। संयुक्त राष्ट्र संघ का समर्थन और विश्व शांति के मार्ग को प्रशस्त किया। भारत ने हमेशा से ही इस धारणा में विश्वास और इस दिशा में निरन्तर प्रयत्न किये है। इस प्रकार से विदेश नीति की परम्परा को बनाये रखा गया। क्योंकि जनता सरकार ने जान लिया था कि पूर्व विदेश नीति राष्ट्रीय सहमति और राष्ट्रीय हितों पर आधारित हैं। जनता सरकार अपने से पूर्व सरकारों की भांति राष्ट्रीय स्वतन्त्रता व निर्णय की स्वतन्त्रता को बनाये रखना।

28 जुलाई 1979 से 10 जनवरी 1980 तक चौ. चरणसिंह भारत के प्रधानमंत्री रहे।17 उनके समय में विदेश नीति में किसी प्रकार का बदलाव नहीं किया गया।18 इस प्रकार जनता पार्टी व लोकदल दोनों सरकारों की विदेश नीति पूर्वोतर ही थी। उसमें निरन्तरता और परिवर्तन दोनों ही गुण निहित थे। पड़ौसी राष्ट्रों तथा विश्व की दृष्टि में भारत की छवि निखरी। यही सबसे बड़ी विशिष्ट सफलता रही ।

REFERENCE संदर्भ 1. एस.पी.सिंह - पोलिटिकल डाईमेन्सन ऑफ इण्डिया रिलेशन, पृ. 220 2. टाईम्स ऑफ इण्डिया, 25 मार्च, 1977 3. जे.एन. दीक्षित-इण्डिया फॉरन पोलिसी 1947-2003, पृ. 118 4. लोकसभा में विदेश मन्त्री का भाषण, 29 जून, 1977 5. प्रकाश चन्द्र-अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, पृ. 177 6. दिलबाग सिंह बिसला-राजीव गांधी और भारती की विदेश नीति, पृ. 107 7. दि ट्रिब्यून, 15 अप्रैल, 1978 8. वी.एन.खन्ना-लिपाक्षी अरोड़ा, पृ. 162 9. आर्गेनाइजर, 4 फरवरी 1963, नई दिल्ली 10. अन्तराष्ट्रीय सम्बन्धों और प्रतिरक्षा पर प्रस्ताव, 2 फरवरी, 1964 11. एम.बी.राव-डाक्यूमेन्टस ऑफ दी हिस्ट्री ऑफ दी कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली, 1978, खण्ड 7, पृ. 46 12. जे.एन.दीक्षित-इण्डिया फॉरन पोलिसी 1947-2003, पृ. 121 13. अटल बिहारी वाजपेयी न्यू डाइमेन्सन ऑफ इंडियाज फोरन पालिसी, नई दिल्ली, 1979, पृ. 62 14. अटल बिहारी वाजपेयी- न्यू डाइमेन्सन ऑफ इंडियाज फोरन पॉलिसी, नई दिल्ली, 1979, पृ. 59 15. सुरेन्द्र चौपड़ा-सटडिज इन इण्डियन फोरन पोलिसी, अमृतसर, 1988, पृ. 468 16. इण्ड्यन एक्सप्रैक्स, 12 अक्तूबर 1978, नई दिल्ली 17. दी ट्रिब्यून, 29 जुलाई, 1979 18. जे.एन. दीक्षित-इण्डिया फॉरन पोलिसी 1947-2003, पृ. 134